त्रिआयाम सिद्धान्त

इस सिद्धान्त के प्रतिपादक जे॰ पी॰ गिलफोर्ड (J. P. Guilford) हैं। उन्होंने अपने परीक्षणों द्वारा यह प्रतिपादित करने की चेष्टा की है कि व्यक्ति की किसी भी मानसिक प्रक्रिया या बौद्धिक कार्य को तीन आधारभूत आयामों में बाँटा जा सकता है—

1. Operation (संक्रिया)
2. सूचना सामग्री या विषय वस्तु (content)
3. उत्पाद (Products)

Scanned with CamScanner

संक्रिया — संक्रिया से तात्पर्य व्यक्ति द्वारा की जानेवाली मानसिक प्रक्रिया के स्वरूप से होता है। गिलफोर्ड ने संक्रिया के आधार पर मानसिक क्षमताओं को 5 भागों में बाँटा है —

(a) मूल्यांकन (Evaluation)
(b) अभिसारी चिंतन (Convergent thinking)
(c) अपसारी चिंतन (divergent thinking)
(d) स्मृति (Memory)
(e) संज्ञान (Cognition)

विषयवस्तु — इस आयाम से तात्पर्य उस क्षेत्र से होता है जिसके सूचनाओं के आधार पर संक्रियाएँ की जाती है

उत्पादन — इस आयाम से तात्पर्य किसी विशेष प्रकार की विषय-वस्तु

Scanned with CamScanner

द्वारा की गई संक्रिया का परिणाम से होता है। इस तरह के परिणाम को गिलफोर्ड ने 6 भागों में बाँटा है, जो इस प्रकार है —

(a) आशय (Unit or U)
(b) वर्ग (classes)
(c) सम्बंध (relations)
(d) पद्धतियाँ (systems)
(e) स्थानांतरण (Transformations)
(f) आशय (Implications)

इस तरह से स्पष्ट है कि गिलफोर्ड ने अपने सिद्धांत में बुद्धि की व्याख्या तीन आयामों (dimensions) के आधार पर की है। प्रत्येक आयाम के कई इकाई है।

Scanned with CamScanner

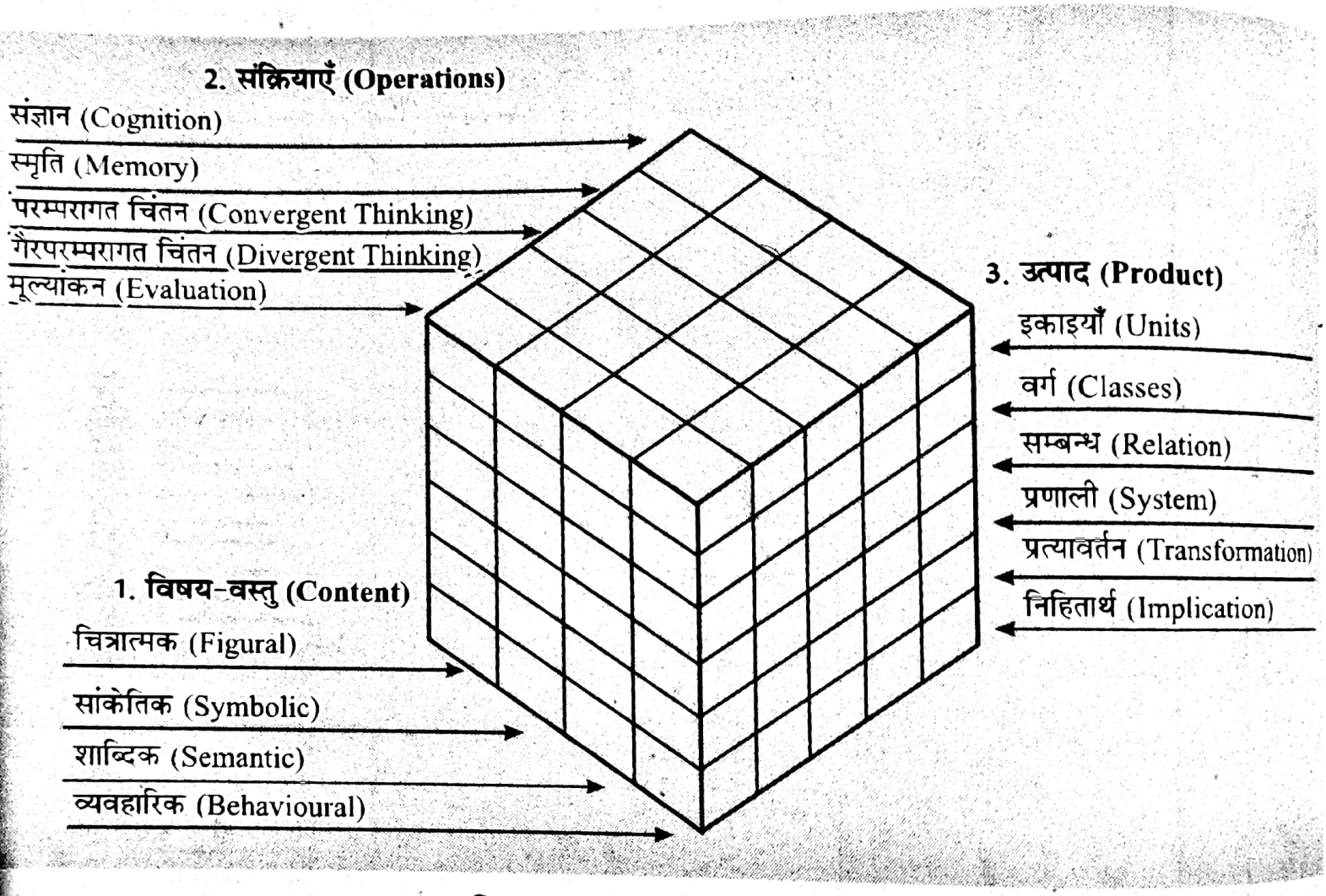

चित्र 7—त्रिआयाम सिद्धान्त

Scanned with CamScanner